Exam. Code : 216304
Subject Code : 5088

M.A. (Hindi) 4th Semester

UTTAR KAVYADHARA KE SANDARBH ME GURU TEGBAHADUR JI KI BANI KA VISHESH ADHYAN

Paper—XX Opt.(i)

Time Allowed—2 Hours] [Maximum Marks—80

नोट :— कोई **चार** प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के समान अंक हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) जगत महि झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥

(ख) साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल त्रिसना संगि बसत है या ते थिरु न रहाई ॥
कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
रतनु गिआनु सभ को हरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) साधो गोबिंद के गुन गावउ।

मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ॥

पतित पुनीत दीन बंधु हरि सरनि ताहि तुम आवउ॥

गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहै बिसरावउ॥

(ख) रे मन ओटि लेहु हरिनामा॥

जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना॥

बड़भागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै॥

जनम जनम के पाप खोइ के फुनि बैकुंठि सिधावै॥

3. गुरु तेग बहादुर की वाणी की मूल संवेदना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

4. गुरु काव्यधारा परंपरा और विकास का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य में गुरु तेग बहादुर का स्थान निर्धारित कीजिए।

5. गुरु तेग बहादुर की वाणी में पौराणिक प्रसंगों पर प्रकाश डालिए।

6. गुरु तेग बहादुर की वाणी में भारतीय संस्कृति पर विचार कीजिए।

7. गुरु तेग बहादुर की वाणी का परवर्ती पंजाब साहित्य पर पड़े प्रभाव को विवेचित कीजिए।

8. गुरु तेग बहादुर की वाणी की प्रगतिशीलता पर सारगर्भित नोट लिखिए।